बाइबल की विशेषताएं

बाइबल की कुछ विशेषताएं इतनी आश्चर्यजनक हैं कि वे इसके ईश्वरीय मूल से होने का संकेत देती हैं। यद्यपि इन विशेषताओं का संक्षेप में पहले ही उल्लेख किया जा चुका है, परन्तु उनकी अधिक गहराई से जांच करने से और लाभ होगा।

विविधता में इसकी एकता

बाइबल के हैरान करने वाले गुणों में से एक विविधता में इसकी एकता है। इस संरचना पर विचार करें: पवित्र बाइबल के छियासठ भाग हैं, जिन्हें लगभग चालीस लेखकों ने तीन भाषाओं में पन्द्रह सौ से अधिक वर्षों के अन्तराल में लिखा, जिनमें से अधिकतर एक दूसरे को जानते तक नहीं थे। ये लोग विभिन्न स्थानों में, विभिन्न सरकारों (अश्शूरी, बाबुल की, मादा फारस की, यूनान की तथा रोम की) के शासन में हुए।

इन अलग-अलग लोगों के लेखों को इकट्ठा किए जाने पर उनकी एकता चकित करने वाली होती है। बाइबल का विषय, तथ्य तथा सिद्धांत प्रतिबिम्बित करते हैं कि एक बहुत बड़ा दिमाग इन लेखों को लिखवाने में लगा हुआ था। आइए लेखों के इस विलक्षण संग्रह में एकता के उदाहरण पर नज़र डालें।

यीशु

पवित्र शास्त्र की मुख्य एकता यीशु है, क्योंकि भविष्यवाणी की आत्मा यीशु की गवाही है (प्रकाशितवाक्य 19:10ग)। बाइबल की प्रत्येक पुस्तक का इस गलीली पुरुष और लोगों के साथ उसके सम्बन्ध से कुछ न कुछ सम्बन्ध है। परमेश्वर को यह अच्छा लगा कि वह सब बातों को अपने पुत्र में एकत्र करे (इफिसियों 1:10)। यीशु के बारे में किसी ने लिखा है:

> उत्पत्ति में मैं उसे शीलो की भविष्यवाणी के रूप में देखता हूं। निर्गमन में, फसह के मेम्ने के रूप में, लैव्यव्यवस्था में पापबलि के बकरे के रूप में। भजन संहिता में, चरवाहे के रूप में। सुलैमान के गीत [श्रेष्ठगीत] में, शारोन देश के गुलाब, तराइयों के सोसन फूल, और दस हज़ारों में उत्तम के रूप में। अय्यूब में,

सुनवाई का दिन तय करने वाले व्यक्ति के रूप में। यशायाह में, दुखी दास के रूप में। दानिय्येल में, पवित्र जन के रूप में। यिर्मयाह में, शाखा के रूप में। मत्ती में, मसीह के रूप में। मरकुस में, आश्चर्यकर्म करने वाले के रूप में, लूका में ख्रिस्तुस के रूप में। यूहन्ना में, वचन के रूप में। प्रेरितों के काम में जीवन के राजकुमार के रूप में। रोमियों में, छुटकारा दिलाने वाले के रूप में। पहला कुरिन्थियों में, परमेश्वर की बुद्धि के रूप में। कुलुस्सियों में, पूरी सृष्टि के पहलौठे के रूप में। पहला पतरस में, प्रधान रखवाले के रूप में। प्रकाशितवाक्य में, अल्फा और ओमेगा के रूप में।[1]

प्रगतिशील धर्म

बाइबल की एकता का एक अन्य उदाहरण इसके उस विकास में मिलता है जो मनुष्य के साथ परमेश्वर के व्यवहार में प्रगतिशील धर्मों को प्रस्तुत करता है: पहले धर्मतन्त्र, फिर यहूदी धर्म और अन्त में मसीही धर्म। इन तीन कालों में पारिवारिक धर्म, राष्ट्रीय धर्म और अन्तर्राष्ट्रीय धर्म आते हैं। प्रकट धर्म के संपूर्ण कार्यक्षेत्र की स्पष्ट और संयुक्त तस्वीर देते हुए पुराने व नए नियम में इन धार्मिक प्रणालियों के तर्कसंगत तथा जलवायु सम्बन्धी विकास को दर्ज किया गया है।

रूप व प्रतिरूप

पवित्र लेखों में एक चौंकाने वाला उदाहरण रूपों तथा प्रतिरूपों में मिलता है। पुराने नियम की घटनाएं नये नियम में प्रासंगिक होती हैं। स्वप्न में मिलने वाली सीढ़ी का प्रतिरूप यीशु में था। मूसा द्वारा बनाया गया वहनीय ढांचा उस आत्मिक वेदी की ओर संकेत करता था जिसे मनुष्य के हाथ से नहीं बनाया गया था। मन्ना कहलाने वाली छोटी-छोटी खाने की सफेद वस्तुएं, जो स्वर्ग से उतरी थीं, यीशु का प्रतिनिधित्व करती थीं। लाल सागर से आश्चर्यजनक ढंग से पार निकलना नये नियम के बपतिस्मे का एक रूप था (देखिए 1 कुरिन्थियों 10:2)। एक पत्नी, एक दासी और उनके दो पुत्र दो धर्मों की व्याख्या के लिए रूपक कथा बन गए हैं (गलतियों 4:22-26)। एक याजक जो राजा था, याजक और राजा की भूमिका के लिए मसीह की परछाई था। रूप और प्रतिरूप, परछाई और वास्तविकता की एकता में इतनी निकटता है, कि पुराने नियम को ''छिपा हुआ नया नियम'' कहा जाता है, जबकि नये नियम को ''प्रकट हुआ पुराना नियम'' माना जाता है।

पूरी हुई कहानियां

बाइबल के एक भाग में आरम्भ हुई कथाएं, जो कुछ देर के लिए अधूरी रहीं, अन्तिम पुस्तक में पूरी हो जाती हैं। परमेश्वर की इस पुस्तक के आरम्भ में उल्लेखित, जीवन के वृक्ष की कहानी को प्रकाशितवाक्य में यूहन्ना पूरा करता है। प्रथम माता से आरम्भ हुई कष्ट और आंसुओं की कहानी सब आंसुओं के मिटाए जाने से चरम तक पहुंचती है। प्रथम पाप से आरम्भ हुई शापों की कहानी इस ईश्वरीय आश्वासन के साथ पूरी होती है कि ''फिर शाप

न होगा'' (प्रकाशितवाक्य 22:3)। आदम और हव्वा के अदन से निकाले जाने के शीघ्र बाद बलिदानों का इतिहास प्रकाशितवाक्य में, वध किए हुए मेम्ने की तरह दिखाई देने वाले यहूदा के शेर की कहानी में रोमांचक चरम तक लाया जाता है (प्रकाशितवाक्य 5:6)।

तुलनाएं

अलग-अलग लेखकों तथा परिस्थितियों के होने पर भी जिस एकता की बात की गई है, वह तुलनात्मक दृष्टि से और भी ध्यान देने योग्य बन जाती है। पन्द्रह सौ वर्षों के समय में लिखी गई तीन भाषाओं के कई लेखकों की पुस्तकों का चयन करने वाले को उनमें कुछ पारस्परिक सम्बन्ध पाकर आश्चर्य होगा। प्राचीन यूनानी लेखों को एक पुस्तक में रखने पर भी, उनमें केवल भाषिक एकता ही मिलेगी कि उन्हें यूनानी भाषा में लिखा गया है।

बाइबल की तुलना धर्म की अन्य पुस्तकों से करने पर केवल यह बात ही स्पष्ट होती है कि इतनी अनेकता में इसकी एकता चौंकाने वाली है। दूसरी धार्मिक पुस्तकों में बाइबल की अपेक्षा बहुत कम एकता पाई जाती है। तथाकथित पवित्र पुस्तकों में ''कोई एकता नहीं है। वे भिन्न-भिन्न स्रोतों से ली गई सामग्रियां हैं, जिनमें ... न क्रम है, न विकास या कोई योजना।''[2]

बिना किसी पूर्व योजना के चालीस मूर्तिकारों द्वारा (जिनमें से अधिकतर एक दूसरे को जानते ही नहीं थे) किसी मूर्ति के अंगों को तराशकर एक सुन्दर सी मूर्ति बनाना असम्भव होगा। इसी प्रकार, बिना एक ही संयोजक के चालीस कलाकार सर्वोत्तम रचना कहलाने वाले ऐसे चित्र को नहीं बना सकते थे। एक व्यक्ति की देखरेख में न बनी पहेली (puzzle) की कतरनें सही नहीं जुड़ेंगी। सुलैमान के समय में बिना हथौड़ी या कुल्हाड़ी या लोहे के किसी औज़ार की आवाज़ के एक सुन्दर मन्दिर में लगे पत्थर पूर्व-योजना के बिना नहीं हो सकते थे (1 राजा 6:7)। सामंजस्य के बेहतरीन नमूने, जिसे बाइबल कहा जाता है, की ये तुलनाएं इसके लिखे जाने में किसी निरीक्षक के होने की बात पर ज़ोर देती हैं। विभिन्न कलाकारों द्वारा कोई संगीतमय कार्यक्रम बिना योजना या किसी की देखरेख के बिना नहीं हो सकता, और बाइबल की समरूपता पर भी यही सिद्धांत लागू होता है।

इसकी सहजता व गहराई

बाइबल के अलौकिक मूल से होने की दूसरी विशेषता इसकी अद्‌भुत सहजता से जुड़े हुए गहरे अर्थ हैं। बाइबल में बताई गई यूसुफ, दानिय्येल, और यीशु की कहानियां बड़ी ही स्पष्ट हैं। बार-बार पढ़ने पर, वे युवा वर्ग के साथ-साथ बूढ़ों का ध्यान भी आकर्षित करती हैं। इसके साथ ही, बाइबल की बातें मनुष्यों की कई चर्चाओं में बार-बार दोहराई जाती हैं। उद्धार की योजना इतनी सरल है कि इसे न समझने वाला केवल बहाना करता है (यशायाह 35:8; इफिसियों 5:17); फिर भी भविष्य की बातों के बारे में यूहन्ना के दर्शनों को पूरी तरह से नहीं समझा जा सकता है और न ही इसके ज्ञान के भण्डारों की गहराई को नापा जा सकता है (रोमियों 11:33)। यहूदी/अन्यजाति के पारस्परिक प्रभाव की, जिसे जैतून के पेड़ में खाई

के रूप में दिखाया गया है, विद्वान बार-बार उस पर खोज करते हैं (रोमियों 11:16-24)।

यह एक ऐसी पुस्तक है जो सुव्यवस्थित नहीं है, और इसके नियम भी क्रमानुसार विधान के रूप में नहीं दिए गए; फिर भी भलाई, नेकी, धार्मिकता और दयालुता के लिए मनों पर इसके प्रभाव पर संदेह नहीं किया जा सकता है। यद्यपि इसमें बहुत से स्पष्ट कर्त्तव्यों की आज्ञा है, परन्तु फिर भी इसका केन्द्र बिन्दु परमेश्वर व मनुष्य के प्रति प्रेम का महान सिद्धांत ही है। यह तथ्य कि बच्चा हो या बूढ़ा दोनों एक पुस्तक की सराहना कर सकते हैं, संकेत देता है कि वह पुस्तक मानवीय मूल से बहुत ऊपर है।

इसकी निष्पक्षता

बाइबल के परमेश्वर की पुस्तक होने का तीसरा प्रमाण इसके मुख्य पात्रों का निष्पक्ष चित्रण है। सामान्यत: जीवनी लेखक या तो अपने नायकों की गलतियां छिपा कर उनकी प्रशन्सा करते हैं, या वे पात्र की कमियों को कुछ अधिक दिखाकर अपने विषयों को आलोचनात्मक बनाकर पेश करते हैं। परन्तु, बाइबल में सराहना या निन्दा वाली कोई बात नहीं है। किसी पात्र के गुण या दोष को सामान्यत: पाठक ही निर्धारित करता है।

बाइबल नूह के सराहनीय गुणों को बताती है और फिर उसके मतवालेपन का स्पष्ट वर्णन करती है। आदर्श संवाददाताओं की तरह, बाइबल के लेखकों ने दाऊद के गुणों तथा पापों को स्पष्ट लिखा है। धर्म शास्त्र में इब्राहीम के गहरे विश्वास को बताया गया है, परन्तु इसमें फिरौन के साथ उसके झूठ बोलने को भी छिपाया नहीं गया है। सुसमाचार के लेखकों की पतरस के प्रति अवश्य ही गहरी संवेदना होगी, परन्तु उन्होंने मसीह के प्रति उसके समर्पण और उसके इन्कार को ज्यों का त्यों बताया है। याकूब और यूहन्ना की व्यक्तिगत इच्छा उतनी ही स्पष्ट रूप से लिखी गई है जितनी मसीह के प्रति उनकी वचनबद्धता।

यद्यपि वे पक्षपात कर सकते थे, परन्तु बाइबल के लेखकों ने यह दिखाते हुए कि वे पक्षपात करने वाले लोग नहीं थे, किसी से पक्षपात नहीं किया। उनका निर्ण्यैक्तिक होना उन्हें दूसरे जीवनी लेखकों के दायरे से बाहर लाकर ईश्वरीय अगुआई में लिखने वाले होने का संकेत देता है।

इसकी संक्षिप्तता

परमेश्वर की पुस्तक होने का बाइबल का एक और विशेष गुण इसका संक्षिप्त किन्तु स्पष्ट होना है। इन्सानी दिमाग से लिखने वाले अपने लेखन को संक्षिप्त करने की कोशिश में रहते हैं। लेखन की इस शैली से पवित्र शास्त्र को लिखने वालों ने व्यापक सम्मान पाया है। संसार की रचना को केवल तीस आयतों में बहुत ही स्पष्ट रूप से चित्रित किया गया है, इतने कम शब्दों में कि किसी औसतन समाचार पत्र में गेंद के खेल को बताने के लिए भी इससे अधिक शब्द चाहिए। अकेले उत्पत्ति की पुस्तक में ही केवल पचास अध्यायों में मनुष्य के इतिहास के कम से कम पच्चीस सौ वर्षों का वर्णन है।

यीशु के बपतिस्मे के बारे में बताने के लिए केवल पांच आयतों की आवश्यकता है

और समुद्र को शांत करने के लिए भी केवल पांच की ही। यीशु के रूपान्तरण को आठ पदों में बताया गया है जबकि यीशु की मृत्यु का वर्णन केवल दो अध्यायों में ही कर दिया गया। बारह सौ दिनों की यीशु की सेवकाई को चौंतीस दिनों की घटनाओं में संक्षिप्त कर दिया गया है। स्तिफनुस ने, एक अध्याय के प्रवचन में लगभग दो हज़ार वर्षों का इतिहास बता दिया है। पहले प्रेरित की मृत्यु को केवल ग्यारह शब्दों में ही वर्णित किया गया है (प्रेरितों 12:2)।

इस प्रकार की घटनाओं के लिए आम तौर पर मनुष्य बहुत सा विवरण और अत्यधिक शब्दों को जोड़ना चाहता है। इस प्रकार की महत्वपूर्ण घटनाओं को बताने में संक्षिप्त और वाक्संयम होना बहुत ही कठिन काम होता है। बाइबल की एक आयत को कुछ शब्दों में लिखने और इसके अर्थ को बनाए रखने की चुनौती को स्वीकार नहीं किया गया। सामग्री को बिना बदले संक्षिप्त करने में बाइबल के लेखकों की सफलता संकेत देती है कि उन्हें किसी महान शक्ति की सहायता प्राप्त थी।

इसका वाक्संयम

बाइबल के लेखकों के संयम ने लोगों को हैरान कर दिया है। बाइबल विशेष उद्देश्य के लिए लिखी गई थी, और वह उद्देश्य मनुष्य की जिज्ञासा को संतुष्ट करना नहीं था। पवित्र शास्त्र को लिखने वाले लोग यदि साधारण लेखक होते, तो यकीनन ही वे कैन की पत्नी के परिचय का विवरण, मूसा की कब्र, यीशु के जीवन के अठारह खामोश वर्षों, यीशु के रंगरूप, यूहन्ना 8:6, 8 में भूमि पर लिखे उसके शब्द, मरे रहने के समय लाज़र के चार दिनों का अनुभव और स्वर्गलोक में पौलुस के जाने का वर्णन विस्तार से करते। यदि उन घटनाओं के विवरण उपलब्ध होते तो आज भी, वे समाचार पत्र की सुर्खियां बनते; उन पर लिखी जाने वाली पुस्तकें सबसे अधिक बिकतीं। यह तथ्य कि बाइबल के लेखकों ने जीवन और भक्ति से सम्बन्धित सब बातों को देने के उद्देश्य को ध्यान में रखा (2 पतरस 1:3) और मानवीय जिज्ञासा को शान्त करने के लिए नहीं लिखा, बाइबल को दूसरी किताबों से अलग करता है।

इसकी साहित्यिक श्रेष्ठता

बाइबल की बातों की साहित्यिक श्रेष्ठता बाइबल के ईश्वरीय मूल से होने की एक और विशेषता है। परमेश्वर की ओर से होने के अपने दावे के अलावा, साहित्यिक रचना के रूप में भी बाइबल को प्रथम स्थान प्राप्त है। एक विद्वान ने लिखा है कि ''शैलियों के इस्तेमाल में इब्रानी भविष्यवक्ता वह चमक दिखाते हैं'' जो ''उन्हें उनके जैसे बाबुल या मिसर या किसी भी अन्य स्थान के किसी व्यक्ति से कवियों के रूप में अधिक ऊंचा दर्जा देता है।'' अय्यूब की पुस्तक ''समजातीय संस्कृतियों में समान नमूनों से ऊंचे स्तर की है।''

नये नियम के सम्बन्ध में, लूका और पौलुस को छोड़कर, इसके लेखक स्पष्टत: अशिक्षित ही थे (देखिए प्रेरितों 4:13)। ऐसे लोगों द्वारा पुस्तक लिखने की बात, अपने आप में आश्चर्यजनक है। जीवन भर अपने व्यवसाय में ही लगे रहने वाले कुछ मछुआरों ने बिना कोई बड़ी गलती किए कुछ लिखा था, परन्तु बाइबल के इन लेखकों ने आत्मसंयम और

स्व-अनुशासन दिखाया। बाइबल के परमेश्वर की ओर से होने को प्रमाणित करने के लिए साहित्यिक श्रेष्ठता की आवश्यकता नहीं है, परन्तु स्वर्ग से मिली पुस्तक में ऐसे ही गुण की कोई अपेक्षा करेगा।

इसकी संपूर्णता

नया नियम अपने आप में सिद्ध व्यवस्था होने का दावा करता है (याकूब 1:25) और दो हज़ार वर्षों बाद भी इसका दावा वही है। इसकी शिक्षा के अनुसार जीवन बिताने वालों को इसमें कोई कमी या सुधार की आवश्यकता नहीं लगती।

किसी वस्तु के मानवीय स्रोत से होने का चिह्न यह है कि इसे प्रमाणित नहीं किया जा सकता है। अमेरिका में *मैक्गफे'ज़ रीडर* और *रे'ज़ ब्ल्यू बैक स्पैलर* पुस्तकें इतनी अच्छी होने पर भी उनमें सुधार की गुंजाइश थी; अब इन पुस्तकों की जगह दूसरी पुस्तकों ने ले ली है। एक पीढ़ी पहले बच्चों की रसायन विज्ञान की पुस्तक में सिखाया जाता था कि परमाणु अदृश्य है, और तत्वों का रूप परिवर्तन केवल कीमियागरों की न पूरी होने वाली इच्छा ही थी। रसायन विज्ञान की वे पुस्तकें अब संग्रहालयों में ही मिलती हैं।

पीढ़ी दर पीढ़ी, बाइबल बदली नहीं है और न ही इसे संपादन की आवश्यकता है। बहुत से लोगों ने बाइबल से अधिक ज्ञान होने का दावा किया है, परन्तु उनकी नई शिक्षाएं लोगों के लिए ऐसा कुछ नहीं कर सकीं जो बाइबल लगातार करती आ रही है। यदि बाइबल पूरी तरह से मानवीय कृति (रचना) होती, तो यह मनुष्य के काम का पहला उदाहरण होती जिसे सुधार या आधुनिक बनाने की कोई आवश्यकता नहीं थी।

कलीसिया के धर्मसार, चाहे बाइबल पर ही आधारित हों और विद्वानों द्वारा लिखे गए हों, परन्तु उन्हें बार-बार संशोधित करना पड़ता है। ऐसी ही अपेक्षा है, क्योंकि उन्हें पवित्र आत्मा की प्रेरणा प्राप्त लोगों ने नहीं लिखा था। यह तथ्य कि बाइबल प्रत्येक देश और प्रत्येक युग में अपनी ताज़गी और सम्मान को बनाए रखती है जिसमें उसके संशोधन की कोई आवश्यकता नहीं, इसे सबसे अलग बना देता है।

इसकी अनश्वरता

अन्त में, इतिहास पर विचार कीजिए जो बाइबल की सुरक्षा के अलौकिक ढंग की ओर संकेत करता है: सदियों के विध्वंसों और आग की परीक्षा के बावजूद अस्तित्व में रहने की इसकी अद्‌भुत योग्यता। पुस्तकों के साथ यदि छेड़छाड़ न भी की जाए तो भी, वे उस पीढ़ी में ही जिसमें उन्हें लिखा गया, केवल कुछ प्रतिशत ही बच पाती हैं। विलक्षण रूप से बाइबल में हर नई पीढ़ी के लिए ताज़गी तथा प्रासंगिकता है।

जिस देश में बाइबल लिखी गई वहां और पुस्तकें भी लिखी गई थीं, परन्तु वे टिक न सकीं। उनके बारे में जानकारी केवल पुराने नियम के हवालों से ही मिलती है (देखिए गिनती 21:14; यहोशू 10:13)। यहूदी धर्म की उपलब्ध अप्रामाणिक (apocryphal) पुस्तकें बाइबल के धर्म से अपने सम्बन्ध के कारण ही प्रचलन में हैं। किसी ने लिखा है:

> कैसर का साम्राज्य जाता रहा; रोम की सेनाएं धूल में मिल चुकी हैं, हिमखण्ड जिन्हें नेपोलियन यूरोप पर फेंकता था पिघल चुके हैं; फिरौनों के राजकुमार नाश हो गए हैं; जिन पिरामिडों में उन्होंने अपनी कब्रें बनाईं थीं वे हर रोज रेगिस्तान की रेत में धंस रहे हैं; सूर मछुआरों के जाल साफ करने के लिए चट्टान है; ... परन्तु परमेश्वर का वचन आज भी जीवित है। इसे मिटाने की धमकियां देने वाले सब लोग केवल इसकी सहायता करने वाले ही ठहरे; और इससे हर रोज प्रमाणित होता है कि मनुष्य का बनाया हुआ अच्छे से अच्छा महत्वपूर्ण उदाहरण कितना अल्पकालिक है और परमेश्वर की कही गई छोटी से छोटी बात भी कितनी स्थिर रहने वाली है।[3]

जातियों का उदय व पतन होता रहता है, परन्तु बाइबल ज्यों की त्यों ही बनी रही है। नीरो पौलुस की हत्या करने में सफल हो गया; परन्तु आज नीरो और उसका साम्राज्य मिट चुके हैं। रोम में उस जेल का जिसमें पौलुस को रखा गया था, अस्तित्व नहीं रहा है, परन्तु जेल में लिखी पौलुस की पत्रियां आज भी जीवित तथा सक्रिय हैं।

303 ईस्वी में, सम्राट डियोक्लेशियन ने पवित्र शास्त्र की सारी प्रतियां नष्ट करने की आज्ञा दी थी। उसे लगा कि उसके सिपाहियों तथा परीक्षकों ने इसमें सफलता प्राप्त कर ली है; अपनी कल्पित सफलता का जश्न मनाने के लिए, उसके पास एक तमगा था जिस पर ये शब्द उकेरे हुए थे: *''मसीही धर्म को नष्ट कर दिया गया है और देवताओं की उपासना बहाल हो गई है।''* उसके बाद, एक जगह जहां पर बाइबलें जलाई गई थीं, उसने एक स्मृति चिह्न बनवा दिया जिस पर लिखा गया था *''मसीही लोगों का नाम मिट चुका है।''* उसके प्रयासों के बावजूद, पवित्र शास्त्र की प्रतियां फिर से मिलने लगीं और इनकी गिनती बढ़ती गई। बीस साल बाद एक और रोमी सम्राट, कांनस्टेंटाइन अपने साम्राज्य में प्रत्येक कलीसिया के भवन में बाइबलें रखने लगा। बाइबल अविनाशी होने का दावा करती है (1 पतरस 1:23) और उस शक्तिशाली रोमी साम्राज्य पर इसकी विजय दिखाती है कि इसका दावा डींग ही नहीं है।

पवित्र शास्त्र के विरुद्ध भौतिक रूप से हिंसा के अलावा, अविश्वासियों ने सदा तक रहने के बाइबल के दावों को झूठा ठहराने के असंख्य प्रयास किए हैं (यशायाह 40:8; मत्ती 24:35; मरकुस 13:31; लूका 21:33)। अपनी प्रशंसा करने वाले वोल्टेयर ने, जिसकी मृत्यु 1778 में हुई, भविष्यवाणी की थी कि उसके आक्रमणों के कारण एक सौ वर्षों के अन्दर-अन्दर बाइबल खत्म हो जाएगी। उसने डींग मारी ''मसीहियत को आरम्भ करने वाले तो बारह लोग थे। इसे समाप्त एक ही आदमी कर देगा।'' परन्तु, उसकी मृत्यु के शीघ्र बाद, द ब्रिटिश एण्ड फॉरैन बाइबल सोसायटी की स्थापना हो गई; इस सोसायटी ने बाइबलें रखने के लिए वोल्टेयर के अध्ययन कक्ष का ही इस्तेमाल किया। जिन प्रैसों में वोल्टेयर का नास्तिक साहित्य छपता था, उन्हीं पर बाइबल की प्रतियां छपने लगीं!

थॉमस पेयन, जिसकी मृत्यु 1809 में हुई थी, अपनी बदनाम पुस्तक *एज ऑफ रीज़न* के द्वारा बाइबल की आलोचना पर इतना घमण्ड करता था कि उसने डींग मारी, ''अब से

पचास वर्षों के अन्दर, बाइबल पुरानी पड़ जाएगी और लोग इसे भुला देंगे।'' फिर, वही प्रैस जहां उसकी पुस्तक छपी थी, हज़ारों बाइबलें छापने के काम आई।

कोई और ऐसी पुस्तक नहीं है जिसने बाइबल के जैसे भीषण आक्रमण सहे हों। ''आज भी इस पर अत्याचार होता है, इसे कष्ट झेलना पड़ता है, और तोड़ा-मरोड़ा जाता है, और फिर भी यह जीवित रहती है, जैसे कि रहेगी भी, तो इसका कोई भी श्रेय हमारे आधुनिक साहित्यिक समीक्षकों को नहीं जाता।'' विशुद्ध मानवीय मूल से बनी कोई भी पुस्तक पवित्र शास्त्र पर होने वाले भीषण आक्रमण सहकर जीवित नहीं रह सकती।

कल शाम मैं लोहार के दरवाज़े के पास रुक गया,
वहां मैंने अहरन की, सुरीली झंकार की आवाज़ सुनी;
और अन्दर झांककर, फर्श पर मैंने
समय की मार पड़े पुराने हथौड़े देखे।
''तुम्हारे पास कितनी अहरनें थीं?'' मैंने पूछा,
''इन सब हथौड़ों को घिसाने और पीटने के लिए?''
''केवल एक,'' उसका उत्तर था। फिर आंखें टिमटमाकर कहने लगा:
''जानते हो, ये हथौड़े इस अहरन पर पड़ते हैं।''
और ऐसे ही, मैंने विचार किया, कि परमेश्वर के वचन की अहरन पर
युगों से नास्तिकों की चोटें होती रही हैं,
परन्तु उन चोटों का शोर तो सुनाई देता था
फिर भी अहरन बिल्कुल नहीं बदली; हथौड़े बदलते रहे।[4]

सारांश

बाइबल के प्रशंसनीय गुणों में इसकी एकता, इसकी शानदार सहजता, इसकी निष्पक्षता, इसकी संक्षिप्तता, इसका संयम, इसकी साहित्यिक श्रेष्ठता, इसकी संपूर्णता और इसकी अनश्वरता शामिल हैं। कुछ विशुद्ध इन्सानी पुस्तकों में इन आठ उत्तम गुणों में से एक या अधिक होते हैं, परन्तु ये सभी आठ गुण केवल एक ही पुस्तक में हैं। यह तथ्य अपने आप में एक मजबूत प्रमाण है कि बाइबल का स्रोत मनुष्य नहीं परमेश्वर है।

पाद टिप्पणियां

[1]अज्ञात। [2]जेम्स ऑर, सं. *द इंटरनेशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशि.: Wm. B. ईर्डमैन्स पब्लिशिंग कं., 1955), 1:467 में ''बाइबल''। [3]लेखक अज्ञात। [4]जॉन क्लिफार्ड, *मास्टर पीसज़ ऑफ़ रिलिजियस वर्स,* सं. जेम्स डाल्टन मॉरिसन (न्यूयार्क: हायर एण्ड ब्रदर्ज, 1948), 493 में ''गॉड'ज़ वर्ड।''